DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

छंद

LIVE 07-05-2024 09:00 AM

छन्द

- वर्णिक छन्द
- मात्रिक छन्द
- मुक्तक छन्द

परिभाषा ⇒ छन्द छद् धातु से मिलकर बना है जिसका अर्थ आह्लादित या खुश करना होता है।

जिस रचना में मात्राओं तथा वर्णों की विशेष व्यवस्था तथा संगीतात्मक लय और गति की योजना रहती है उसे छन्द कहते है।

छन्द शब्द का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

* छन्द तीन प्रकार के होते हैं।
* छन्द का दूसरा नाम पिंगल है।
छन्दशास्त्र के आदि प्रणेता पिंगल नाम के ऋषि थे।

छन्द के संघटक तत्व -

① चरण | पद ⇒ छन्द कुछ पंक्तियों का समूह होता है और प्रत्येक पंक्ति में समान वर्ण या मात्राएँ होती है इन्हीं पंक्तियों को चरण कहा जाता है

② - वर्ण ⇒ ध्वनि की मूल इकाई को वर्ण कहते हैं। छन्दशास्त्र में वर्ण दो प्रकार के होते हैं

(।) लघु ⇒ अ, इ, उ, ऋ और चन्द्रबिन्दु वाले वर्ण

(ऽ) गुरु ⇒ आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, विसर्गयुक्त वर्ण तथा अनुस्वार एवं संयुक्त वर्ण

③ - मात्रा ⇒ वर्णों के उच्चारण में जो समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं

लघु (।)

गुरु (ऽ)

④- क्रम ⇒ वर्ण या मात्रा की व्यवस्था को क्रम कहते हैं।

⑤- यति ⇒ छन्दों को पढ़ते समय बीच-बीच में कुछ रुकना पड़ता है इन्हीं विराम स्थलों को यति कहते हैं।

⑥- गति ⇒ गति का अर्थ लय है। छन्दों को पढ़ते समय मात्राओं के लघु अथवा दीर्घ होने के कारण जो विशेष स्वर लहरी उत्पन्न होती है उसे गति कहते हैं।

⑦- तुक ⇒ छन्द के प्रत्येक चरण के अन्त में स्वर-व्यंजन की समानता को तुक कहते हैं।

④- गण ⇒ तीन वर्णों के समूह को गण कहते है।

सूत्र- यमाताराजभानस लगा

यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण

↳ इनकी संख्या आठ होती है।

गणों को याद करने के लिए सूत्र है – यमाताराजभानसलगा

गण	चिह्न	प्रभाव	उदाहरण	गण का नाम
यमाता	ISS	शुभ	बहाना	यगण
मातारा	SSS	शुभ	आजादी	मगण
ताराज	SSI	अशुभ	बाजार	तगण
राजभा	SIS	अशुभ	नीरजा	रगण
जभान	ISI	अशुभ	प्रभाव	जगण
भानस	SII	शुभ	नीरद	भगण
नसल	III	शुभ	कमल	नगण
सलगा	IIS	शुभ	वसुधा	सगण